मेदि॰

मान् । वृह नं लागु अते शेमहापा ट ग ले पुमान् ॥ १६४ ॥ स्टाफलः स्व न्यं फ तेनारि के ले पुद्र महों । सिनी वाली नु हु हे चु कलामा दु गें याः सि सा । १६५ ॥ अय से व वं लं से जिशारे वल व गानि । हिलि म स्वोऽ भामान के शाह्व ना गे विनाय के ॥ १६६ ॥ हिर ना लंधा नु भे दे स्वीद्र बी का शाह्व ने वल से प्रे अञ्चनायों विषे सियां ॥ १६७ ॥ सपं व ॥ आस नो बल आस ने बल अस ने स्वाद के निलान समुद्र योः ॥ १६० ॥ स्थान धिये । का पी टिपाल अहिए के लिनान समुद्र योः ॥ १६० ॥ स्थान धिये । का पी टिपाल अहिए के लिनान समुद्र योः ॥ १६० ॥ स्थान धिये ने प्रे विस्ता अहिए के लिनान समुद्र योः ॥ १६० ॥ स्थान धिये । का पी टिपाल अहिए के लिनान समुद्र योः ॥ १६० ॥ स्थान धिये । का पी टिपाल अहिए के लिनान समुद्र योः ॥ १६० ॥ स्थान धिये । का पी टिपाल अहिए के लिनान समुद्र योः ॥ १६० ॥ स्थान धिये । का पी टिपाल अहिए के लिनान समुद्र योः ॥ १६० ॥ स्थान धी प्रियः सिता ॥ १७० ॥ इति ला न वर्गः

वाना ०

वेकं॥ वः मान्छ नेचवाने चवर् ग्रोचिनगद्याने। व म्य चेनिस्जानीयादिवा र्थवनद्व्ययं॥ १॥ खः स्थान्यंस्थान्मनिज्ञाती चिष्यान्मीयेधनेऽ स्वियां ॥ व दिः॥ अविनी होरवे। मेधेरी लेमू पिककम्बले ॥ २॥ अण्वः पुञ्जातिभेदेच तरगे चपुमानयम्। अर्द्धीस्था दुन्कि तेनु क्रेची परिष्टाट पिस्मृतं॥ २॥ स्वः श्चुतेग जिकायां कविवालमी किष्णु क्रयाः। स्रोका व्यकरेपं स्थिली नेस्यानुयोषिति ॥ ४॥ कर्यं पापे मुनै। पुंसिकिर्यं बीजेचशी धुनः। पापे स्वी